आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 12 अगस्त-2018 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सन्देश

पारम्परिक पशुपालन के साथ आय बढ़ाने के लिए सहायक व्यवसाय भी अपनाएं

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों !

राम–राम सा ।

राज्य में इस बार मानसून ने समय पर दस्तक दी है और पूरे राज्य में अच्छी वर्षा का दौर चल रहा है। अपने खेतों में जुताई और बुआई के साथ–साथ जल की एक–एक बूंद का उपयोग करने के लिए भी हमें सचेष्ट रहना चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री ने 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य दिया है। अपनी आय में अभिवृद्धि के लिए समन्वित खेती को अपनाते हुए आधुनिक तकनीक और ज्ञान का उपयोग करना जरूरी है। पारंपरिक पशुपालन के साथ ही मुर्गी, बतख, मछली और मधुमक्खी पालन जैसे व्यवसाय कम लागत, समय और श्रम में स्थाई लाभ देने वाले हैं। अतः उपलब्ध संसाधनों के अनुसार इनका उपयोग सुनिश्चित करें। खेतों में बनी डिग्गियां और पौण्ड्स को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लिया जा सकता है। मछली पालन ग्रामीण क्षेत्र में अतिरिक्त रोजगार का एक साधन और खाद्य समस्या के निराकरण में भी सहयोगी है। मछली पालन एक उत्तम व्यवसाय है। मछलियों में 13.22 प्रतिशत प्रोटीन, 1 से 3 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 5 प्रतिशत खनिज पदार्थ और इसके अतिरिक्त विटामिन बी–12, बी–6 राईबोफ्लेविन, नियासिन, थायमिन विटामिन पाए जाते हैं। फॉर्म पौण्ड/डिग्गी में 5 से 6 फीट जल स्तर मछली पालन के लिए रखकर शेष पानी को सिंचाई के लिए उपयोग में लिया जा सकता है। डिग्गी की तली में 1 फीट मिट्टी की सतह बिछाएं। इनमें संचय योग्य मछली की प्रजातियों में कतला, रोहू, म्रिगल और कॉमन कॉर्प शामिल हैं। मछली पालन हेतु निजी भूमि पर तालाब निर्माण, मत्स्य कृषकों के पुराने जलाशयों के जीर्णोद्धार, मछली पालन के प्रथम वर्ष में होने वाले उपादान खर्चों, मत्स्य बीज हैचरी की स्थापना, फिश फीड इकाई जैसे कार्यों के अनुदान के लिए मत्स्य विभाग से संपर्क किया जा सकता है। मत्स्य कृषकों के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। राज्य सरकार द्वारा वित्तीय सहायता और अनुदान दिए जाने का प्रावधान भी है। जिला मत्स्य अधिकारी से तकनीकी परामर्श प्राप्त कर आप इस व्यवसाय को शुरू कर सकते हैं। कृषि और पशुपालन से सम्बद्ध अन्य व्यवसायों को शुरू करके हम अपनी आय में अभिवृद्धि कर सकते हैं।

जय हिन्द!

(प्रो. बी. आर. छीपा)

राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के सौजन्य से राजुवास में पशुपालक-वैज्ञानिकों की राज्यस्तरीय कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए राजस्थान विधानसभा सदस्य श्रीमती सूर्यकांता व्यास और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा

मुख्य समाचार

विश्व जूनोटिक दिवस पर निःशुल्क रेबीज शिविर में 63 श्वानों का हुआ टीकाकरण

"वर्ल्ड जूनोटिक डे" के अवसर पर 6 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय की मेडिसिन क्लिनिक्स में निःशुल्क श्वान रेबीज टीकाकरण शिविर में 63 श्वानों का टीकाकरण करके श्वानों को नए टोकन आंवटित किये गए। एक दिवसीय शिविर वेटरनरी कॉलेज और केनाइन वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। वेटरनरी क्लिनिक्स में इस विशेष चिकित्सा शिविर में बीमारियों से बचाव और जागरुक करने के लिए श्वान पालकों को मुद्रित साहित्य का वितरण किया गया। शिविर में केनाइन वेलफेयर सोसाइटी के सचिव प्रो. अनिल आहूजा, निदेशक क्लिनिक्स प्रो. जे.एस. मेहता, डॉ. आर.के. तंवर, डॉ. दीपिका धूडिया, डॉ. सुनीता चौधरी, डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. जे.पी. कच्छावा, डॉ. नजीर सहित पीएच.डी. विद्यार्थी डॉ. सविता, डॉ. राजेन्द्र यादव, डॉ. ताराचंद और स्नातकोत्तर छात्रों में डॉ. तुषार, डॉ. योगेन्द्र, डॉ. शिवांगी, डॉ. सुरेन्द्र कोली, डॉ. रामचन्द्र, डॉ. जितेन्द्र सहारण और डॉ. राकेश कुमार ने शिविर में सेवाएं प्रदान की। विश्व जूनोटिक दिवस पर वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने बताया कि पशुओं से मनुष्य में फैलने वाली बीमारियों को जूनोटिक रोग कहा जाता है। इनमें रेबीज, ब्रूसेलोसिस, क्यूटेनियस लिसमैनियसिस, प्लेग, टी.बी., टिक पैरालाइसिस, गोल कृमि, साल्मोनिलोसिस जैसी बीमारियां शामिल हैं। इनमें कई बीमारियां प्राणघातक होती हैं परन्तु समय पर उपचार से बचाव किया जा सकता है। समय पर टीकाकरण से इनको रोका जा सकता है।

राजुवास में पशुपालकों–वैज्ञानिकों की राज्य स्तरीय कार्यशाला समन्वित खेती आय बढ़ाने का जरिया हैः कुलपति प्रो. छीपा

राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के सौजन्य से वेटरनरी विश्वविद्यालय में 13 जुलाई को कृषक–पशुपालकों और वैज्ञानिकों की एक दिवसीय राज्यस्तरीय कार्यशाला संपन्न हो गई। इस कार्यशाला में राज्य के विभिन्न जिलों से आए 120 कृषक पशुपालकों, पशुपालन अधिकारियों, शोधार्थी और वैज्ञानिक शामिल हुए। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती व्यास ने कहा कि किसान अन्नदाता है। कृषि और पशुपालन से ही किसान को मजबूती दी जा सकती है। उन्होंने जिलों में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना से गांव–ढ़ाणी तक वैज्ञानिक प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यों को पहुँचाने के कार्य की सराहना की। समारोह की अध्यक्षता करते हुए हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि समन्वित खेती (पशुपालन के साथ) से ही किसानों की आय बढाई जा सकती है। इसके लिए उत्पादन बढ़ाने की आधुनिकतम तकनीकों और वैज्ञानिक विधियों को अपनाने के लिए किसान और वैज्ञानिकों को साझे प्रयत्न करने होगे। राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. शैलेश शर्मा ने कहा कि पशुपालकों की जरूरत के मुताबिक अनुसंधान कार्य करने के लिए वैज्ञानिकों को एक दिशा चाहिए। संस्थान द्वारा कार्यशाला के माध्यम से पशुपालकों और क्षेत्रीय समस्याओं का चिन्हित किया जा रहा है। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने कहा कि किसान–पशुपालकों तथा सरकार की सोच है कि कृषि और पशुपालन से आय बढ़े। ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन से कृषक–पशुपालकों की जरूरत के मुताबिक अनुसंधान को दिशा मिलने से अच्छे परिणाम आयेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक और कार्यशाला के संयोजन प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी, बकरी अनुसंधान और उष्ट्र अनुसंधान संस्थानों तथा वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रमुख वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन की विभिन्न विधाओं पर 7 व्याख्यान प्रस्तुत कर पशुपालकों की शंकाओं और समस्याओं का भी निराकरण किया गया। अतिथियों ने इस अवसर पर राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित पुस्तिका "पशुपालन आर्थिक अन्नति का आधार" का विमोचन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच ने सबका आभार जताया। राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. जयंत होले ने तकनीकी सत्र का संचालन किया। राष्ट्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मथुरा के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने के लिए जैव प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका है। इसके लिए कृत्रिम–गर्भाधान, इन–विट्रो फर्टिलाईजेशन तकनीक और जीन आधारित पशुओं का चयन प्रमुख है। जैव प्रौद्योगिकी से ट्रांसजैनिक एनीमल के द्वारा पशुओं के दूध में आवश्यक प्रोटीन और गुणवत्ता बढाई जा सकती है जिनका प्रयोग मनुष्यों में उपचार के लिए भी किया जाता है। मनुष्यों की तरह पशुओं में भी स्टेम सैल से रोग निदान के उपयोग की संभावनाएं हैं। राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. एफ.सी. टूटेजा ने बताया कि केन्द्र द्वारा ऊंटों के दूध उत्पादन और प्रसंस्करण पर प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रो. त्रिभुवन शर्मा में देशी पशुओं की नस्ल सुधार, प्रो. जी.एन. पुरोहित ने पशुमादा प्रजनन और पशुगणना, प्रो. ए.के. कटारिया ने पशुओं और मुर्गियों में परजीवी रोगों पर तथा प्रो. सुनील मेहरचंदानी ने जैव तकनीकी से पशु स्वास्थ्य में सुधार पर व्याख्यान दिए।

गांव डाइयां में कुलपति प्रो. छीपा द्वारा वृक्षारोपण

राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गांव डाईयां में कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने 21 जुलाई को विश्वविद्यालय अधिकारियों के साथ वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. छीपा, वेटरनरी कॉलेज के

अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच और प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय परिसर में नीम के पौधे रोपित कर गांव में वृक्षारोपण की शुरूआत की। कुलपति प्रो. छीपा ने डाइयां में विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सूचना केन्द्र, तालाब के जीर्णोद्वार और प्राथमिक विद्यालय में सौर ऊर्जा संचालित विद्युत आपूर्ति के कार्यों का निरीक्षण भी किया। डाइयां के प्रभारी अधिकारी डॉ. नीरज शर्मा ने कुलपति को वहां संचालित जनकल्याण कार्यक्रमों की जानकारी दी। गांव के सूचना केन्द्र में पुस्तकालय–वाचनालय सेवाओं और कियोस्क द्वारा ग्रामीणों को लाभान्वित किया जा रहा है। राजुवास द्वारा गांव में अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना के तहत संचालित मारवाड़ी बकरी केन्द्र का निरीक्षण किया। राजुवास की पहल पर गांव में स्वास्थ्य उप केन्द्र स्थापित कर पशुपालकों को सेवाएं भी उपलब्ध करवायी जा रही हैं।

गृहविज्ञान की 17 विद्यार्थियों ने पोल्ट्री और तकनीकी म्यूजियम का किया अवलोकन

स्वामी केशवानंद राज. कृषि विश्वविद्यालय की गृह विज्ञान महाविद्यालय के बी.एस.सी. (ऑनर्स) के प्रथम वर्ष की विद्यार्थियों ने ऑरियेन्टशन प्रोग्राम के तहत 18 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान) डॉ. मंजू राठौड़ की अगुवाई में विद्यार्थियों ने पोल्ट्री और राजुवास म्यूजियम का अवलोकन कर पशुचिकित्सा और पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों की जानकारी ली। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा ने विद्यार्थियों को पशु विविधिकरण मॉडल में कुक्कुटशाला की मुर्गी, बतख, खरगोश पालन और उसके आर्थिक महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान के 24 विद्यार्थियों द्वारा पोल्ट्री और तकनीकी म्यूजियम का भ्रमण

स्वामी केशवानंद राज. कृषि विश्वविद्यालय की कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने ऑरियेन्टशन प्रोग्राम के तहत 21 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। सहायक प्राध्यापक डॉ. अदीति माथुर और राकेश राठौड़ की अगुवाई में विद्यार्थियों ने पोल्ट्री और राजुवास म्यूजियम का अवलोकन कर पशुचिकित्सा और पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों की जानकारी ली। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा ने विद्यार्थियों को पशु विविधिकरण मॉडल में कुक्कुटशाला की मुर्गी, बतख, खरगोश पालन और उसके आर्थिक महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 12, 18, 20, 21, 24 एवं 25 जुलाई को गांव जिगसाना ताल, ढ़ाणा पट्टा राजपुरा, राणासर, जैतासर, राजास एवं लिखमणसर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 230 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 7, 9, 18, 20 एवं 25 जुलाई को गांव मुकलावा, सिलवानी, रिड़मलसर एवं पतरोड़ा तथा दिनांक 25 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 89 महिला पशुपालकों सहित कुल 196 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 16, 19, 23 एवं 26 जुलाई को गांव सूरपगला, थल, मालप, ओडा तथा मांडानी गांवो में तथा दिनांक 25 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 194 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा 313 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 9, 10, 11, 12, 16, 17, 18, 19 एवं 20 जुलाई को गांव डाबडा, धनकोली, बावडी, भादलिया, लादड़िया, निमोद, गैलासर, भादासर एवं दाउदसर गांवों में तथा दिनांक 28 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों मे 91 महिला पशुपालक सहित 313 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 233 पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 10, 11, 13, 17, 18 एवं 19 जुलाई को गांव नेलखा, शिवनाथपुरा, रामसर, देवलिया, नरबदखेड़ा(केसरपुरा) एवं सूरजपुरा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 233 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 11, 13, 16, 18, 21 एवं 23 जुलाई को गांव भण्डारी, आसेला फलां, पुनाली, दामोद, नारानियां एवं झरनी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 258 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 5, 6, 9, 10, 17, 18, 19 एवं 23 जुलाई को गांव सिनसिनी, नगला मैथना, लुघावई, घसौंला, निरहरू, सिरथला, मांझी, केसरा तथा गहनावली

गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 37 महिला पशुपालक सहित कुल 141 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 17, 18, 24, 25, 26, 27 एवं 28 जुलाई को गांव ताखोली, सरोली, खिड़गी, करीमपुरा, भैरूपुरा, अहमदपुरा चौकी तथा बालापुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 182 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 20, 24, 25, 26 एवं 28 जुलाई को गांव रामसरा, पुनरासर, बदरासर, अजुर्नसर स्टेशन एवं रामबाग गांवो में तथा 27 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 195 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 196 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 11, 13, 20, 21, 23, 25 एवं 28 जुलाई को गांव कल्याणपुरा, गोर्धनपुरा, झालरा, हिंगोनिया, जहांगीरपुरा, बनेठिया एवं रंगपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 196 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा केन्द्र द्वारा 351 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 4, 7, 12, 13, 19, 20 एवं 21 जुलाई को गांव सुखवाड़ा, चित्तौड़ी, सुरजना, मेडी का अमराना, अचलपुरा, भूतिया कलां एवं घाचसा गांवों में तथा 10, 17 एवं 24 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 351पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 344 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 9, 11, 17, 18, 20, 23, 26 एवं 27 जुलाई को गांव भैसाख, समोला, नयापुरा, डागुरपुर, कासिमपुर, सुन्दरपुर, भेरो का पुरा तथा धर्मपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 344 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 18, 21, 23, 24, 25, 26, 28 एवं 30 जुलाई को गांव बैरू, देदीपा–नाड़ा, चौखा, बड़ली नेड, रोहिला कलां, मोकलावास, रोहिला खुर्द एवं ढ़ओं की ढाणी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 51 महिला पशुपालकों सहित कुल 233 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 17–20 एवं 23–26 जुलाई को गांव छानी बड़ी एवं सागडा गांवों में तथा 9–12 केन्द्र परिसर में तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 119 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अगस्त माह में पशुओं की देखभाल

इस बार राजस्थान राज्य में अभी तक औसत से अधिक वर्षा हो चुकी है और राज्य के लगभग सभी क्षेत्रों में अच्छी वर्षा हुई है। वर्षा के बाद पशुओं के लिए हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है लेकिन इस समय पशुपालकों को कुछ समस्याओं से सामना करना पड़ता है। पशुओं में सबसे बड़ी समस्या इस समय कब्ज, आफरा तथा दस्त की होती है। सामान्यतः यह परेशानी पशु द्वारा अत्याधिक हरा चारा खाने से होती है। अतः पशुपालकों को ध्यान रखना चाहिए कि पशु को आवश्यकता से अधिक हरा चारा नहीं खिलाया जाए तथा हरे चारे के साथ सूखी तूड़ी भी मिलाकर खिलाई जानी चाहिए। पशुओं में इस समय मक्खी–मच्छर काटने से विषाणुजनित व परजीवी जनित संक्रमण भी बहुत होते हैं। पशुपालक को चाहिए कि पशु बाड़े के आस–पास गंदा पानी एकत्र ना होने दें और बाड़े को साफ–सुथरा रखें। गड्डे–पोखर व गंदे पानी के पास उगे चारे को खाने से कृमि व जीवाणु विभिन्न प्रकार के आंत्र सम्बंधित रोग उत्पन्न करते हैं अतः पशुपालकों को ऐसे चारे को पशु को नहीं देना चाहिए। इस मौसम में सरीसृप भी बहुत ज्यादा सक्रिय होते हैं अतः पशुपालकों को सावचेत रहकर अपने पशुओं को सर्पदंश से बचाना चाहिए। अगस्त माह में काफी संख्या में नवजात पैदा होते हैं। पशुपालक को इन नवजात को वर्षा में भीगने से बचाना चाहिए अन्यथा वो न्यूमोनिया के शिकार हो सकते हैं। सामान्यतः यह देखा जाता है कि मच्छर–मक्खियों से बचाव के लिए पशुपालक पशु बाड़े में सूखे पत्तों इत्यादि को जलाकर धुंआ करते हैं जिससे पशु को श्वांस रोग व न्यूमोनिया हो सकता है। अतः पशुपालकों को ध्यान रखना चाहिए कि बाड़े में अत्याधिक धुंआ ना हो और पशुघर में स्वच्छ हवा का समुचित आवागमन हो।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

देशी मुर्गों की नस्ल को जानें

घागस मुर्गी

घागस मुर्गी की नस्ल कोलार जिले और कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के आस–पास के स्थानों में मिलती है।

लक्षण

1. पंख मुख्य रूप से भूरे रंग के होते हैं, पंखों पर भूरे रंग के धब्बे पाए जाते हैं।
2. चमकते हुए ब्लू पंख ब्रेस्ट, पूंछ और जांघों पर पाए जाते हैं। गर्दन सुनहरे पंखों से ढकी हुई होती है।
3. घागस मुर्गी की नस्ल में वेटल्स अनुपस्थित होते हैं।
4. सिर पे कंघी लाल और मटर या एकल प्रकार की होती है।
5. मुर्गे में स्पर अन्य नस्लों की अपेक्षा छोटा होता है।

वयस्क मुर्गे का वजन 2.16 ± 0.25 ग्राम और वयस्क मुर्गी का वजन 1.43 ± 0.81 ग्राम होता है। वयस्क मुर्गी 5 से 7 महीने में अंडे देना प्रारम्भ कर देती है। घागस मुर्गी की नस्ल का वार्षिक अंडा उत्पादन : 45–60 ग्राम तथा औसत अंडे का वजन : 40.25 ± 2.39 ग्राम होता है।

सांस्कृतिक/आर्थिक महत्व

यह मुख्य रूप से कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के घुमन्तु आदिवासियों की नस्ल है। पक्षियों को अंडे और/खेल के उद्देश्यों के लिए बड़े पैमाने पर घर के पिछवाड़े में पाला जाता है।

देशी गाय का घी : ऊर्जावान एवं औषधीय गुणों से भरपूर

देशी घी (संस्कृत घृतम) भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से भोजन के एक अवयव के रूप में महत्वपूर्ण एवं विशेष प्रकार का वसा पदार्थ है जो गाय, भैंस आदि के दूध से बनाया जाता है। भारतीय भोजन में खाद्य तेल की तरह भी इसका उपयोग होता है। यह दूध अथवा दही के मक्खन से बनाया जाता है। घी बनाने के देशी तरीके दूध का दही जमाकर उसका मक्खन मथकर निकाल कर उसको कढ़ाई में गर्म करके घी निकाला जाता है। घी का उपयोग भारत में वैदिक काल के पूर्व से होता आ रहा है। पूजा पाठ में देशी घी का उपयोग अनिवार्य है। अनेक औषधियों के निर्माण में घी काम आता है।

घी, विशेषतः पुराना घी (संस्कृत : पुराण घृतम) आयुर्वेदिक चिकित्सा में दवा के रूप में भी प्रयोग होता है। चरक संहिता के अनुसार, यह दस साल पुराना होना चाहिए। चरक संहिता के चिकित्सा स्थान–उन्माद चिकित्सा सम्बंधित सूत्र पुराण घृतम की मनोचिकित्सीय उपयोगिता पर प्रकाश डालते है। आयुर्वेद काय चिकित्सा के प्रसिद्ध ग्रन्थ भावप्रकाश के अनुसार, घी के लिए हवा तंग (एयर टाइट) लोहे या स्टील या मिट्टी के बर्तन से बने पात्र में एक वर्ष से अधिक संग्रहित घी, ''पुराण घृतम'' कहा जाता है। पुराण घृतम आयुर्वेद के अनुसार बेहोशी (मूर्छा), त्वचा रोगों (कुष्ठ), विषाक्तता की स्थिति (विष), एक प्रकार का पागलपन, पागलपन (उन्माद), मिर्गी, दौरे (अपस्मार), रतौंधी, आंख अंधापन से जुड़े विकार (तिमिर), सिरदर्द विकारों और मस्तिष्क से संबंधित रोग (शिरोरोग), स्त्रीरोग विकारों (योनिरोग), कान विकारों (कर्णरोग), नेत्र विकारों (अक्षिरोग), बुखार (ज्वर), अस्थमा, सांस की बीमारी या सांस लेने में कठिनाई से जुड़े विकारों (श्वास), सर्दी, खांसी (कास), बवासीर (अर्श), छींक आना (पीनास), मानसिक विकारों (गृहरोग) आदि रोगों एवं विकारों में निर्दिष्ट किया गया है। दस साल से अधिक संगृहीत घी प्रापुराण घृतम कहा जाता है और आयुर्वेद के अनुसार मिरगी (अपस्मार) और पागलपन (उन्माद) के इलाज में विशेष रूप से उपयोगी है। पुराने घी का अलग–अलग औषधि मार्गों से प्रयोग किया जाता है यथा, नाक में बूंदों के रूप में (नास्य), आंख में मल्हम के रूप में (अक्शीपूरण), मालिश या बाहरी अनुप्रयोग (अभ्यंग), एनीमा (बस्ति कर्म), मौखिक सेवन (पान) आदि।

पंचगव्य घृत – पंचगव्य घृत (नासिका में डालने का घी) बनाने की विधि जो हमारी जानकारी में आई है, उसे हम आपसे साझा कर रहे हैं और जो इस प्रकार है –

सामग्री – गौ घृत (देशी गाय का घी), छाछ या दही, गोमूत्र, गोमय (देशी गाय का गोबर), रस एवं गौदुग्ध सभी समान मात्राओं में लेने है।

विधि –

1. घृत मूर्छना – पहले हम गौ घृत को मूर्छित करते हैं– त्रिफला, हल्दी, नागरमोथा व निम्बू रस डालते हुए घी पकाया जाता है।
2. जब सिर्फ घी बच जाए तब दही या छाछ डालकर पकाते हैं।
3. तत्पश्चात् गोमूत्र डालकर पकाते हैं फिर गौमय रस डालकर पकाते हैं।
4. फिर दूध डालकर पकाते हैं। अंत में सिर्फ घी बचता है, यही 'पंचगव्य घृत' कहलाता है।

ये पंचगव्य घृत हम कांच की शीशी व कांच के ड्रॉपर के साथ नाक में डालने के लिए काम में लेंगे।

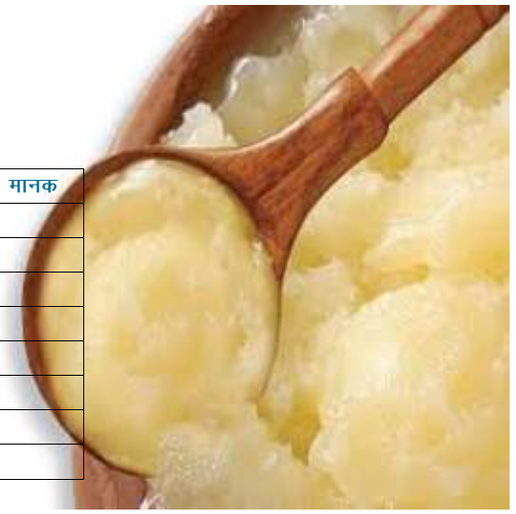

देशी घी के भारतीय (एगमार्क) मानक –

क्र. सं.	गुणधर्म	अखिल भारतीय मानक
1	बॉडोईन टेस्ट	नकारात्मक
2	फायस्टोरोल टेस्ट	नकारात्मक
3	40 डिग्री सेंटीग्रेड पर ब्यूटायरो रेफ्राक्टोमीटर रीडिंग	40–43
4	रेकर्ट मेसल (आर.एम.) वैल्यू	28.0 से कम नहीं
5	पोलेन्स्की वैल्यू	10–20
6	आर्द्रता/नमी प्रतिशत	0.3 से अनधिक
7	फ्री फैटी एसिड का प्रतिशत (ओलिक एसिड)– घी स्पेशल ग्रेड (एगमार्क लाल लेबल	1.4 से अनधिक
8	फ्री फैटी एसिड का प्रतिशत (ओलिक एसिड)– घी सामान्य ग्रेड (एगमार्क हरा लेबल	2.5 से अनधिक

गाय के देशी घी की शुद्धता की जांच कैसे करें?

1. **देशी घी में कोलटार डाई की मिलावट** की पहचान करनी है तो, एक चम्मच घी में 5 मिलीलीटर हाईड्रोक्लोरिक एसिड डालिए– घी लाल हो तो घी के अन्दर कोलतार डाई मिलाई गई है। यह नकली घी की पहचान है।
2. **घी में शकरकंदी या आलू की मिलावट** होने पर जांच के लिए पांच बूंद घी कांच की परखनली में लें। इसमें एक बूंद आयोडीन सोल्यूशन डालें। घी का रंग नीला हो जाना ही घी में स्टार्च (मांड) की मिलावट बताता है। इसे गर्म करने पर घी का नीला रंग उड़ जाता है और ठंडा होने पर घी पुनः उसी रंग का बन जाता है।
3. **देशी घी में वनस्पति/डालडा घी की मिलावट** की पहचान करना एक दम आसान है। एक कटोरे जैसे पात्र में घी लीजिये, फिर उसमें हाइड्रोक्लोरिक एसिड और एक चुटकी चीनी मिलाइए। अगर घी नकली होगा या फिर उसमें डालडा की मिलावट की होगी तो शुद्ध देशी असली घी का रंग एकदम चटक लाल रंग हो जायेगा।

4. **देशी घी में तिल्ली के तेल की मिलावट** की पहचान करने के लिए एक कांच के बर्तन में 100 मिलीलीटर घी में फरफ्युरल और हाईड्रोक्लोरिक एसिड और इसके साथ थोड़ा सा अल्कोहल का भी मिश्रण करें। 8–10 मिनट में अगर देशी घी का रंग लाल हो जाता है तो समझ जाइये कि, इसमें तिल्ली के तेल की मिलावट की गई है।

5. **घी में एसेंस (नकली खुशबू) की मिलावट** की जांच बिलकुल आसान है। एक स्टील के बर्तन में 250 मिलीलीटर प्रामाणिक शुद्ध घी लेकर उसे उबालकर ठंडा होने के लिए एक दिन के लिए ढक कर रख दें। उसी प्रकार खरीदे हुए देशी घी के साथ भी करें। 24 घंटे बाद जब आप असली देशी घी को देखेंगे तो वह ठंडा होकर दानेदार बन चुका होगा लेकिन असली घी की खुशबू बरकरार रहेगी और खाने पर स्वाद से भी आपको पता लगेगा कि घी बिल्कुल शुद्ध है। मिलावटी घी में खुशबू जा चुकी होगी और वनस्पति घी जैसी गंध आयेगी क्योंकि बहुधा घी में पाम आयल या सस्ते वनस्पति घी की मिलावट की जाती है।

गौ – घृत के औषधीय लाभ – भारतीय पारंपरिक चिकित्सा, आयुर्वेद एवं पंचगव्य में देशी गाय के घी के अनेक फायदे बताये गए हैं जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं –

1. गाय के घी को अमृत कहा गया है। गाय का घी 99 प्रतिशत दुग्ध वसा पदार्थ है, अतएव इसमें भरपूर पोषक ऊर्जा क्षमता है। जो युवावस्था को कायम रखते हुए, बुढ़ापे को दूर रखता है। एक गिलास दूध में एक चम्मच गाय का घी और मिश्री डालकर पीना शारीरिक कमजोरी दूर करता है।
2. गाय के घी में स्नेहक क्षमता है। दो बूंद देसी गाय का घी नाक में सुबह शाम डालने में माइग्रेन दर्द ठीक होता है। घी डालने से नाक की खुश्की दूर होती है और दिमाग तरो ताजा हो जाता है।
3. गाय के दूध की तरह ही गाय के घी का नियमित सेवन करने से एसिडिटी व कब्ज की शिकायत कम हो जाती है।
4. आयुर्वेद के अनुसार, पंचगव्य घृत को नाक में डालने से मानसिक शांति मिलती है, याददाश्त तेज होती है।
5. हाथ–पांव में जलन होने पर गाय के घी को तलवों में मालिश करें जलन ठीक होती है।
6. आयुर्वेद के अनुसार 20–25 ग्राम घी व मिश्री खिलाने से शराब, भांग व गांजे का नशा कम हो जाता है। रेचक प्रभाव के कारण विषाक्तता के आयुर्वेदिक उपचार में गाय के घी का उपयोग होता है।
7. फफोलों पर गाय का देसी घी लगाने से आराम मिलता है।
8. नवीन अध्ययनों से निष्कर्ष प्राप्त हो रहा है कि सैचुरेटेड फैट होने के बावजूद देशी गाय का घी बुरे कॉलेस्ट्रॉल को नहीं अपितु अच्छे कॉलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। उच्च रक्तचाप और हृदयरोग में भी देशी गाय का घी का सेवन निरापद और स्वास्थ्यकर है।
9. गाय के घी की सीने पर मालिश करने से बच्चों के बलगम को बाहर निकालने में सहायक होता है।
10. गाय के घी की दो–दो बूंदें दिन में तीन बार नाक में डालने पर आयुर्वेद के अनुसार यह त्रिदोष (वात, पित्त और कफ) को संतुलित करता है। एलर्जी खत्म हो जाती है, नाक की खुश्की दूर होती है। पंचगव्य चिकित्सा के अनुसार गाय का घी नाक में डालने से लकवा रोग में भी लाभ होता है।

–डॉ. अशोक गौड़ डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा एवं
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, (मो. 9414139188)
राजुवास, बीकानेर।

कैसे करें गौशाला का प्रबंधन

गौशाला का निर्माण करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि गायों के आहार की व्यवस्था, दूध निकालने की व्यवस्था तथा साफ–सफाई के कार्य को कम लागत व श्रम में सरलता से किया जा सके। गौशालाओं का निर्माण गर्मी, सर्दी व वर्षा ऋतु के अनुकूल हो। अतः निम्नलिखित बिन्दूओं का ध्यान रखा जाना चाहिए –

1. गौशाला इस प्रकार बनाई जाए कि प्रकाश व वायु अच्छी तरह आ सके। सूर्य का प्रकाश गौशाला को स्वच्छ रखने के साथ ही गायों को भी स्वस्थ रखने में सहायक होगा।
2. गौशाला का फर्श व नालियां इस प्रकार बनाई जाए कि उनकी सफाई उचित ढंग से हो सके। फर्श सीमेंट कंक्रीट का बना हुआ हो व उसकी ऊपरी सतह खुरदरी हो ताकि गाय फिसल कर ना गिरे। फर्श का ढलान इतना रहे कि मूत्र व पानी की निकासी आसानी से हो जाए। नाली चौड़ी व अर्द्धचंद्राकार होनी चाहिए, चौकोर नाली के कोनों में गंदगी जमने की संभावना बनी रहती है।
3. गौशाला की चौड़ाई 12 फुट पर्याप्त होती हैं। लंबाई गायों की संख्या के अनुसार रखी जाती है।
4. गायों की संख्या अधिक होने पर टेल–टू–टेल सिस्टम अपनाना चाहिए, क्योंकि इसमें बीच के स्थान का उपयोग हो सकता है। नाली बीच के मार्ग (5 फीट चौड़ी) के दोनों और बनाई जानी चाहिए।
5. गौशाला में सघन वृक्षारोपण होना चाहिए। नीम, पीपल, बड़ जैसे छायादार वृक्ष उत्तम रहते हैं।
6. प्रत्येक गाय के लिए 60 से 65 वर्ग फीट का स्थान पर्याप्त होता है।
7. प्रत्येक गाय के लिए 1.5 फुट चौड़ी, 3 फुट लम्बी व 9 इंच गहरी नांद पर्याप्त होती है। नांद को स्वच्छ रखने हेतु कोने गोलाकार होने चाहिए।
8. गाय के रहने के स्थान के नजदीक ही चारा गोदाम होना चाहिए। चारा गोदाम व गाय के स्थान के बीच में 5 फीट चौड़ी पट्टी होनी चाहिए, जिससे कि चारे से भरा हुआ हाथ ठेला चल सकें।
9. गोमूत्र इकट्ठा करने के लिए गौशाला के बाहर सुविधा अनुसार स्थान पर गड्ढ़े बनवा लेना चाहिए। नाली को सीधे इन गड्ढ़ों से जोड़ देना चाहिए, ताकि गोमूत्र एवं गौशाला की धुलाई का पानी इसमें इकट्ठा होता रहे।
10. गड्ढ़ों में इकट्ठे गोमूत्र का इस्तेमाल गोमूत्र कीट–नियंत्रक बनाने में किया जा सकता है।
11. सांड को अलग बाड़े में रखा जाना चाहिए। सांड गृह 12'X10' साइज का होना चाहिए, जिसमें एक ही सांड रखना चाहिए।
12. गौशाला की पूर्ण सफाई एवं पानी से धुलाई दिन में एक बार अवश्य होनी चाहिए।
13. पशुओं के शरीर पर लगने वाले चींचड़ व जूंओं आदि परजीवियों की रोकथाम हेतु महीने में कम से कम एक बार उपयुक्त कीटनाशक पानी में मिलाकर (उचित मात्रा में) फर्श व दीवारों पर छिड़कना चाहिए।
14. गौशाला की दीवारों पर वर्ष में कम से कम एक बार चूने में नीला थोथा मिलाकर धुलाई करनी चाहिए।
15. गौशाला में मच्छर–मक्खियों को दूर रखने के लिए नीम की पत्तियों का धुआं किया जा सकता है। इससे विभिन्न प्रकार के जीवाणु या विषाणु नहीं पनपते हैं। जिससे गाय निरोगी रहेगी व उनका उत्पादन भी बढ़ेगा।
16. गौशाला में दुधारू गायों, सुखील गायों, गर्भित गायों, बीमार गाय, बछड़े–बछड़ी व सांडों के लिए अलग–अलग बाड़े होने चाहिए।
17. गायों को बछड़ा–बछड़ी की पहचान रिकॉर्ड या बीमा के लिए कान में बने बनाए नंबर अंकित टैग लगाकर किया जाना चाहिए।
18. गायों को उत्तम प्रमाणित नस्ल के सांड से ही गर्भित कराएं, जिससे कि अगली पीढ़ी के बछड़े–बछड़ी की नस्ल में सुधार हो सके।

–डॉ. तारा बोथरा, डॉ. दिनेश जैन (मो.9413300048) एवं मंगेश कुमार
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर, राजसमन्द
बोवाइन इफिमिरल ज्वर (तीन दिन का बुखार)	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, जालोर, जयपुर, अलवर, सीकर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर, चूरू, पाली, सिरोही, सीकर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	भैंस, गौवंश, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, टौंक
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, दौसा टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, अलवर, उदयपुर, श्रीगंगानगर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, जोधपुर
फड़किया रोग	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर, धौलपुर, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, पाली, सिरोही
सर्रा	ऊँट, भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, सीकर, श्रीगंगानगर, भरतपुर
रक्त परजीवी (थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस)	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, सीकर, भरतपुर
अन्तः परजीवी (कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनूं, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, जयपुर, अलवर, सीकर, हनुमानगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी

पूर्व सैनिक छोटेलाल बने सफल दुग्ध व्यवसाई

गांव बरौली धाऊ तहसील कांमा (भरतपुर) के निवासी छोटेलाल (भूतपूर्व सैनिक) पुत्र बृजसिंह का कृषि व पशुपालन का तालमेल उनके जीवन निर्वाह और आय का एक प्रमुख साधन रहा है। छोटेलाल सेवानिवृत होने के बाद से खेती तथा पशुपालन पर ही आश्रित थे, लेकिन पिछले 3– 4 वर्षो में पशुपालन पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया तथा सार्थक तरीके अपनाये। उन्होंने पशुपालन को एक आजीविका कमाने का निर्णय लिया जो बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। पहले इनके घर में केवल आवश्यकता के अनुसार ही पशुपालन किया जाता था परन्तु समय के साथ – साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरुरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को एक डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। छोटेलाल के पास 12 बीघा जमीन है परन्तु उनका कहना है कि जितनी बचत उन्हें डेयरी व्यवसाय से हो रही है, उतनी कृषि से नहीं हो पाती। वर्तमान में छोटेलाल के पास 10 भैंसें, 3 गाय, 2 बछड़ी तथा 8 पड़डी / पड़ड़े हैं जिनसे प्रतिदिन 80 लीटर दूध का उत्पादन ले रहे हैं। इस दूध को प्रतिदिन 2400 रूपये में बिक्री करके लगभग 1500 रूपये की बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। छोटेलाल बताते हैं कि वे कृषि से भी लगभग 2 लाख रूपये प्रतिवर्ष आय प्राप्त करते हैं। छोटेलाल समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं तथा व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु संपर्क में रहते हैं। छोटेलाल ने बीकानेर एवं जयपुर में विश्वविद्यालय के प्रशिक्षणों में जा चुके है। इन प्रशिक्षणों से प्राप्त जानकारी एवं उन्नत तकनीकों का डेयरी व्यवसाय में उपयोग किया जिससे काफी फायदा हुआ है। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त की। छोटेलाल बताते हैं कि वे प्रशिक्षण से पशुपालन के क्षेत्र में प्राप्त नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी अन्य पशुपालको को भी देते हैं। 48 वर्षीय छोटेलाल अपने डेयरी व्यवसाय में सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र, कुम्हेर को देते हैं। **सम्पर्क :– छोटेलाल, (मो. 9694967916)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

पशुओं में नस्ल सुधार कैसे करें

निदेशक की कलम से...

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाई और बहनों !

पशुओं से अधिक उत्पादन और उन्हें चुश्त–दुरूस्त रखने के लिए उनकी नस्लों का सुधार जरूरी है। मिश्रित नस्ल के पशुओं में उत्पादन क्षमता औसत से भी कम होती है क्योंकि ये पशु किसी खास नस्ल के नहीं होते हैं। इनमें उत्पादन क्षमता के कम होने के साथ–साथ इनके दूध में चिकनाई अर्थात् फैट प्रतिशत भी कम होता है। इन पशुओं का सूखा काल ज्यादा होता है। पशुओं के दूध का काल एक ब्यांत में कम होता है और पशु की शारीरिक रचना भी कमजोर होती है। इन कमियों के कारण पशुओं की खिलाई–पिलाई भी महंगी पड़ती है और ये आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक होते हैं। ऐसे पशुओं में सुधार इनकी नस्ल में परिवर्तन करके किया जा सकता है। पशुओं के नस्ल सुधार के लिए मोटे तौर पर दो विधियां अपनाई जा सकती है– 1. सान्ड का उचित चयन कर देशी–मिश्रित पशुओं के साथ सम्भोग करवाना तथा 2. उचित संभोग की विधि अपनाकर। पहली विधि में साण्ड का उचित चयन करने के लिए उसके शारीरिक गठन, उसकी मां की उत्पादन क्षमता अच्छी होनी चाहिए। काम में लिए जाने वाले साण्ड के वीर्य की जांच करवाकर प्रजनन क्षमता का आंकलन करवाएं और देखें कि वह किसी भी वंशागत बीमारी से मुक्त होना चाहिए। पशुओं की नस्ल सुधार के लिए जो कमी गाय में है वो प्रजनन के काम आने वाले सांड में नहीं होनी चाहिए। बछड़े या बछड़ी में आधे–आधे गुण सांड और गाय से प्राप्त होते हैं। अतः मां का अवगुण सांड के उचित चयन द्वारा बच्चों में दूर होगा। संभोग की विभिन्न विधियों को अपनाकर भी नस्ल सुधार किया जा सकता है। संभोग की मुख्यतः दो विधियां होती हैं – पहली तो रिश्तेदार पशुओं के बीच संभोग करवा कर और दूसरी दूर के रिश्तों के बीच संभोग करवा कर। रिश्तेदार पशुओं के बीच संभोग के कुछ लाभ हैं तो कुछ हानियां भी हैं। पशु के परिवार में कोई बहुत अच्छा सांड है जिसकी उत्पादन क्षमता अपने पूर्वजों से अच्छी है तो यह सांड उपयोगी बना रहता है। इस विधि द्वारा पैदा होने वाले बछडे–बछड़ियों में एकरूपता बनी रहती है। यदि कुछ खराब गुण पीढ़ी–दर पीढ़ी चले आ रहे हैं तो उन्हें इस विधि से दूर किया जा सकता है। रिश्ते वाले पशुओं के बीच संभोग के द्वारा उत्पन्न बच्चों के स्वास्थ्य की विकास दर और प्रजनन क्षमता कम होती है। यह विधि केवल उद्देश्य की प्रमुखता को ध्यान में रखकर उपयोग में लानी चाहिए। बिना रिश्ते के पशुओं के बीच संभोग के भी चार प्रकार हैं (1) उचित आऊट क्रोसिंग विधि (2) शुद्ध नस्ल बनाने के लिए ग्रेडिंग की विधि (3) संकर प्रजनन की विधि और (4) भार ढोने के लिए उपयुक्त दो विभिन्न नस्लों के बीच संभोग करवाकर संकर पशु तैयार करना। आप पशुओं में जिस तरह का सुधार चाहते हैं उसी तरह की उचित विधि अपनाकर पशुओं की नस्ल में सुधार कर सकते है। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अगस्त, 2018** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. एन.वी.पाटिल** **9414721588** निदेशक, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर	उष्ट्र डेयरी द्वारा उष्ट्र पालकों की आमदनी दुगुनी करने का जरिया	02.08.2018
2	**प्रो. जी.एन.पुरोहित** **9414325045** विभागाध्यक्ष, पशुरोग वं प्रसूति विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बरसात के मौसम में पशुओं के प्रजनन संबधी जानकारी	09.08.2018
3	**डॉ. रजनी जोशी** **9414253108** जनस्वास्थ्य विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में ब्रुसलोसिस एवं टीबी रोगों के लक्षण एवं बचाव	16.08.2018
4	**प्रो. बसन्त बैस** **9413311741** विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन एवं तकनीक विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	वर्तमान परिपेक्ष्य में ऑर्गेनिक (जैविक) दूध का महत्व	23.08.2018
5	**डॉ. सी.पी स्वर्णकार** **9414869105** केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, टोंक	सुनियोजित भेड़ स्वास्थ्य प्रबंधन	30.08.2018

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224